॥ श्री दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम स्तोत्र ॥

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गाऽऽपद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥ १॥

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला ॥ २॥

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमाऽऽत्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥ ३॥

दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥ ४॥

दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥ ५॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ।

फलश्रुति :

नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया सुधी मानवः ॥ ६॥ पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ।
शत्रुभिः पीड्यमानो वा दुर्गबन्धगतोऽपि वा । द्वात्रिंशन्नामपाठेन मुच्यते नात्र संशयः ॥ ७॥

विशेष

भगवती दुर्गा की प्रसन्नता हेतु एवं विशेष कार्यसिध्दी हेतु इस स्तोत्र का प्रयोग कर सकते है ! ३० हजार पाठ इस स्तोत्र का पुरश्चरण है ! Swami Rupeshwaranand चैनल पर इस विषय में विस्तारपूर्वक समझाया गया है !

द्वारा संशोधित

जगद्गुरू श्री पीताम्बरा सिद्धपीठाचार्य
श्री श्री 1008 श्रद्धेय स्वामी रूपेश्वरानन्द जी महाराज
स्वामी रूपेश्वरानन्द आश्रम वाराणसी (उत्तरप्रदेश)
www.swamirupeshwaranand.in swamirupeshwaranand
सम्पर्क - 7607 233 230 www.brahmavadini.in